परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था,मुंबई

प्रेमचंद

हिन्दी-11

Handout-1

हिन्दी कथा-साहित्य को ऐयारी और रूमानी वातावरण के कल्पना लोक से निकालकर उसे सामयिकता-सामाजिकता का ठोस धरातल प्रदान करने वाले मुंशी प्रेमचंद का जन्म 1880 ई. में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ था। निर्धन परिवार में जन्मे प्रेमचंद को पिता की असामयिक मृत्यु मे एक और आघात दिया और मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्हें स्कूल में नौकरी करनी पड़ी। इन्होंने 'हंस', 'जागरण' और 'मर्यादा' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। एक बार कहानी लेखक के रूप में फिल्मी-दुनिया में भी गए, परंतु वहाँ के कृत्रिम वातावरण से ऊबकर लौट आए। 1936 ई. में प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष चुने गए। इसी वर्ष के अक्टूबर मास में इनका निधन हो गया।

प्रेमचंद बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार थे। इन्होंने अपने वास्तविक नाम धनपतराय के स्थान पर नवाबराय से उर्दू में लिखना प्राम्भ किया था। परंतु कहानी संग्रह 'सोजे वतन' को अंग्रेजों द्वारा जब्त कर लेने के कारण प्रेमचंद नाम से हिन्दी में लिखना प्रारंभ किया। इनकी पहली हिन्दी कहानी 'पंच परमेश्वर' 1916 ई. में प्रकाशित हुई । तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखने वाले प्रेमचंद की ये रचनाएँ 'मानसरोवर'(आठ भाग) में संकलित हैं। इनके उपन्यासों में सेवासदन, प्रेमाश्रम, गबन, रंगभूमि, गोदान आदि ने विशेष ख्याति प्राप्त की है। इनके निबंध 'कुछ विचार' तथा 'विविध प्रसंग' (तीन भाग) में संग्रहीत हैं।कर्बला,संग्राम और प्रेम की वेदी इनके नाटक हैं।

प्रेमचंद की कहानियों में कहानी कला के विविध रूप और तेवर देखे जा सकते हैं। इनकी कहानियाँ आस-पास के जीवन से जुड़ी हुई हैं।विषय की दृष्टि से इन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक आदि विविध प्रकार की कहानियों की रचना की। इनकी कहानियों में पीड़ित मानवता के प्रति सहज सहानुभूति तथा मानव के प्रति अगाध आस्था है। उनमें समाज मंगल तथा मानव हित की भावना निहित है। इनकी भाषा शैली सहज,सरल एवं मुहावरेदार है। प्रचलित उर्दू शब्दों के जहाँ-तहाँ प्रयोग करने के कारण उनमें स्वाभाविकता एवं चटकीलापन आ गया है। लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से उनमें रवानी आ गई है । अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रेमचंद जनप्रिय कहानीकार बन गए हैं। पूस की रात, कफन, बड़े घर की बेटी, नशा, शंखनाद, शतरंज के खिलाड़ी, सवा सेर गेहूँ, ईदगाह, गिल्ली डंडा आदि प्रेमचंद की कुछ ऐसी

कहानियाँ हैं, जिन्होंने हिन्दी कहानी जगत को नए आयाम दिए हैं और नई कहानी के लिए प्रवेश द्वार उद्घाटित किया है।

'नमक का दारोगा' प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है जिसे आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के एक मुकम्मल उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। यह धन के ऊपर धर्म की जीत की कहानी है। धन और धर्म को हम सद्वृति और असद्वृति , बुराई और अच्छाई , असत्य और सत्य इत्यादि भी कह सकते हैं। कहानी में इनका प्रतिनिधित्व क्रमशः पंडित अलोपीदीन और मुंशी वंशीधर नामक पात्रों ने किया है। ईमानदार कर्मयोगी मुंशी वंशीधर को खरीदने में असफल रहने के बाद पंडित अलोपीपीदीन अपने धन की महिमा का उपयोग कर उन्हें नौकरी से मुयत्तल करा देते हैं, लेकिन अंततः सत्य के आगे उनका सिर झुक जाता है। वे सरकारी महकमे से बर्खास्त वंशीधर को बहुत ऊँचे वेतन और भत्ते के साथ अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करते हैं और गहरे अपराध-बोध से भरी हुई वाणी में निवेदन करते हैं , परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी किनारेवाल बेमुरौवत,उद्दंड, किन्तु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।

जब नमक बनाने पर रोक लगी तो सरकार में एक नया विभाग- नमक विभाग बना। इसके दारोगा पद को अत्यधिक महत्तपूर्ण माना जाने लगा। यहाँ तक कि बड़े-बड़े वकील भी इस पद के लिए लालायित रहते थे । उन दिनों फारसी में दो एक प्रेम-कथाएँ कहने वाले को जल्दी ही अफ़सरी मिल जाती थी। बाबू वंशीधर भी लैला-मजनू, फरहाद आदि के प्रेम-वृतांत सुनकर रोजगार ढूँढने के लिए निकले। उनके पिता ने हिदायत दी कि नौकरी ऐसी ढूँढना , जिसमे ऊपर की आय खूब हो क्योंकि मासिक आय तो पूर्णमासी का चाँद है जो घटते-घटते लुप्त हो जाती है, परंतु ऊपर की आम्दानी बहता हुआ श्रोत है जिससे सदा प्यास बुझती अहि। इस उपदेश को पाकर वंधिधर बाबू नौकरी ढूँढने निकले। सौभाग्य से उन्हें नमक के दारोगा होने का सुअवसर मिला। यह बात सुनते ही उनके स्वजनों के हृदय में खुशी और पड़ोसियों के हृदय में शूल उठने लगे।

जाड़े की एक रात। मुंशी वंशीधर को अभी नौकरी पर आए लगभग छह ही महीने हुए थे। उन्होंने जल्दी ही अपनी कार्य-कुशलता और उत्तम आचार से अफसरों का मन मोह लिया था। दारोगा जी की नींद अचानक पुल पर से गाड़ियों की आवाज़ को सुनकर खुली। वे हड़बड़ा कर उठ बैठे। बाहर आकर देखा कि गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल के पार जा रही है। डाँटकर पूछा -किसकी गाड़ियाँ हैं। थोड़ी देर सन्नाटा छाया रहा। पता चला कि पंडित अलोपीदीन की हैं दातागंज के । मुंशी जी यह नाम सुनकर चौके क्योंकि पंडित अलोपीदीन उस इलाके के सबसे

प्रतिष्ठित व्यापारी थे। उनका अंग्रेजों से भी अच्छा उठना-बैठना था। उन्होंने पता लगाया कि उन गाड़ियों में नमक जा रहा है।

पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर अर्धसुप्त अवस्था में चले जा रहे थे कि उन्हें समाचार मिला - दारोगा जी ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और वे घाट पर आपको बुलाते हैं। पंडित अलोपीदीन को लक्ष्मी की शक्ति पर पूरा भरोसा था। वे मानते थे कि न्याय और नीति तो लक्ष्मी के खिलौने हैं। अतः निश्चिंत होकर दारोगा के पास पहुँचे और बोले - हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए। वंशीधर ने सरकारी हुक्म की चेतावनी दी। अलोपीदीन ने रिश्वत देने की बात काही। वंशीधर पर रिश्वत का जरा भी असर न पड़ा। वह कड़क कर बोले- 'हम उन नमकहरामों में से नहीं है जो कौड़ियों पर ईमान बेचते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं।' दारोगा ने बदलू सिंह को सेठजी को हिरासत में लेने का हुक्म सुनाया, किन्तु अलोपीदीन के प्रभाव के कारण वह उन्हें छू तक न पाया।

अलोपीदीन भौचक्के रह गए। उन्होंने आज तक धन को धर्म के आगे हारते न देखा था। अतः वे उसके सामने गिड़गिड़ाए , दया की गुहार की ; फिर भी वंशीधर पर कोई असर न हुआ। सेठजी ने एक हजार रुपए तत्काल देने की बात कही। वंशीधर ने गरम होकर कहा- " एक हजार नहीं,एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।" सेठजी ने रिश्वत की राशि पाँच,दस,पंद्रह,बीस,तीस और चालीस हजार तक बढ़ा दी,किन्तु वंशीधर का ईमान नहीं डगमगाया। सेठजी ने दया याचना भी की, किन्तु हिरासत के आदेश दे दिये गए।

अगले दिन दुनिया ने सुना तो खूब बातें होने लगीं। पंडितजी के व्यवहार की निंदा हुई। बेईमान और भ्रष्टाचारों ने भी उन पर टीका-टिप्पणी की। जब गर्दन झुकाए अलोपीदीन अदालत में पहुँचे तो मानो सारा शहर उन्हें इस हालत में देखने के लिए उमड़ पड़ा। अदालत में पहुँचते ही हालत बादल गई। यहाँ के सभी कर्मचारी उनके बिना दाम के गुलाम थे। सभी उनके हाथों बिके हुए थे। फट से हलचल और भागीदारी शुरू हो गई। वकीलों की टोली ने मिलकर उन्हें बचाने के दाँव-पेच साधे। इधर वंशीधर के पास सत्य और स्पष्ट भाषण के सिवा अन्य कोई शस्त्र न था। परिणामस्वरूप पक्षपात की ओर झुका हुआ न्यायालय सेठजी के चरणों में झुक गया। डिप्टी मजिस्ट्रेट ने यह लिखा- पंडित अलोपीदीन बहुत बड़े आदमी हैं। वे थोड़े से लाभ के लिए इतना छोटा काम नहीं कर सकते । वंशीधर को नमकहलाली ने उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर दिया है। अतः उन्हें सावधान रहना चाहिए।

यह फैसला सुनकर वकील उछल पड़े। अलोपीदीन मुसकराते हुए अदालत से बाहर निकले, जबकि वंशीधर को समाज ने जी कर अपमानित किया। वंशीधर को जीवन का यह खेदजनक अनुभव हुआ कि कोई भी सत्य के लिए समर्पित होने को तैयार नहीं है। ये बड़ी-बड़ी उपाधियाँ, ढीले-लंबे चोगे सब निरादर के पात्र हैं। सप्ताह बाद वंशीधर को नौकरी से मुअत्तल

कर किया गया। घर वालों ने यह समाचार सुना तो अपना माथा पीट लिया। पिता तो बहुत क्रुद्ध हुए। माँ और पत्नी ने भी नाराज़गी व्यक्त की।

एक सप्ताह बाद सेठ अलोपीदीन वंशीधर के घर पहुँचे। उन्हें आया देखकर वंशीधर के पिता अपनी बदकिस्मती और बेटे की मूर्खता का रोना रोने लगे,किन्तु अलोपीदीन ने उन्हें चौकाते हुए कहा- आपका बेटा कुलतिलक है। ऐसे धर्मपरायण मनुष्यों पर तो सर्वस्व अर्पण किया जा सकता है। उन्होंने वंशीधर से कहा- आज मैं स्वयं आपकी हिरासत में चला आया हूँ। मैंने इस दुनिया में सबको खरीदकर गुलाम बना लिया। मुझे परास्त किया तो केवल आपने। मैं आपके सम्मुख एक विनय लेकर आया हूँ।

सेठजी के हृदय की विशालता और गुण-ग्राहकता देखकर वंशीधर पिघल गए। सेठजी ने वंशीधर के सामने प्रस्ताव रखा कि वह उसकी सारी संपत्ति का स्थायी मैनेजर पद स्वीकार करें। उन्हें छह हजार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोजाना खर्च,सवारी के घोड़े,बँगला, नौकर-चाकर मुफ्त मिलेंगे। यह प्रस्ताव सुनकर वंशीधर ने हाथ जोड़ दिया और कहा-मुझमें न विद्या है, न बुद्धि न वह अनुभव जो इस त्रुटियों की पूर्ति कर देता है। ऐसे महान कार्य के लिए एक बड़े मर्मज्ञ अनुभवी मनुष्य की जरूरत है।

अलोपीदीन ने कलमदान से कलाम निकालकर वंशीधर के हाथों में देकर कहा- 'न मुझे विद्वता की चाह है ,न अनुभव की ,न मर्मज्ञता की, न कार्य-कुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वता की चमक फीकी पड़ जाती है। परमात्मा से यहीं प्रार्थना है कि आपको सदैव वही नदी किनारेवाल बेमुरौवत,उद्दंड, किन्तु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।' वंशीधर की आँखें कृतज्ञता से डबडबा आई। उसने भक्ति भाव से नियुक्ति-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। अलोपीदीन ने प्रफुल्लित होकर उसे गले लगा लिया।

xxxx

द्वारा-
संतोष कुमार खरवाल
प्रशिक्षित स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-2, जादुगोड़ा